The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-401X

भारतीय जीवन दृष्टि-ज्ञान, संस्कृति और अध्यात्म की परिपाटी में संचार

Keshav Patel[1]
[1]*Research Scholar, MGCGU Chitrakoot.*
Correspondence E-mail Id: *editor@eurekajournals.com*

भारतीय जीवन दृष्टि-ज्ञान एवं संचार माध्यम

भारतीय जीवन में संचार संबंधी भारतीय अवधारणा प्राचीन समय से ही रोचक और दिलचस्प रही है। हालांकि आधुनिक संकल्पना में अन्तर्राष्ट्रीय संचार एवं संवाद की बात जोर-शोर से की जाती है, जो भारतीय चेतना और स्मृति में गहरे व्याप्त है। भारतीय जीवन में ज्ञान की उपलब्धता कई मायनों में अतुलनीय है ऐसे कई अनछुए पहलू हैं, जो मनुष्य की आंतरिक सक्रियता को सूक्ष्म और सूक्ष्मेत्तर ढंग से व्याख्यायित करती हैं। पुरातन कला से ही प्रकृति और प्रकृति प्रदत्त संसाधनों से भी जीवन के ज्ञान और उनके संचार के कई प्रारूप हमारे सामने उपस्थित है, साहित्यकार निर्मल वर्मा के शब्दों में-"गंगा महज़ एक नदी नहीं, हिमालय सिर्फ पहाड़ नहीं, वाराणसी और वृंदावन महज़ शहर नहीं हैं। मनुष्य का अतीत संग्रहालयों में बंद नहीं है, न ही उसके देवता यूनानी देवताओं की तरह पौराणिक काल के स्मृति-चिन्ह हैं। मिथक और यथार्थ, पौराणिक स्मृति और वर्तमान जीवन, देवता और मनुष्य आज भी एक साथ रहते हैं। सैकड़ों विश्वासों, आस्थाओं, स्मृतियों और संस्कारों का यह संगम और पारस्परिक संपर्क-संवाद केवल भारतीय संस्कृति में ही संभव हो सकता था-जिसमें संपूर्ण मनुष्य की परिकल्पना निहित रहती है।" (Rai, 2017) भारतीय सभ्यता, संस्कृति, संस्कार और इसके ज्ञान ने हमेशा से ही विश्व को मानवीय कल्याण के लिए प्रेरित किया है। भारतीय वेद, धर्म, संस्कार, ज्ञान, विद्या और विचारधाराएं प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृतियों के विकास का इतिहास, धर्मों के विकास और उनके स्वरूपों के प्रत्यक्ष में आने की एक गहरी परंपरा का ही इतिहास है। भारतीय संस्कृति जितनी पुरानी है उससे कहीं अधिक यह विलक्षण भी है। ऋग्वेद में संवाद-सूक्त के अन्तर्गत दशम मंडल में सरया-पणि(कुतिया और गौ) संवाद है, तो यम-यमी तथा पुरूरवा-उर्वशी संवाद का भी उल्लेख है। मण्डल तीन में विश्वामित्र और नदी संवाद एवं कठोपनिषद् में नचिकेता-यम के बीच अद्भुत संवाद प्रकरण है। बृहदारण्यक में याज्ञवल्क्य ऋषि का मैत्रेयी और

गार्गी से संवाद स्मरणीय है। इसी तरह रामचरितमानस में शिव-पार्वती संवाद और काकभुसुण्डी-गरुण संवाद भारतीय संचार की पारंपरिकता का शाश्वत प्रमाण हैं। (Rai, 2017) भारतीय जीवन दृष्टि की इसी परिपाटी में संचार को माध्यम बनाकर आदि शंकराचार्य ने अद्वैतवाद का सिद्धांत समाज को दिया। उन्होंने अपने एकात्म वाद से समाज में फैली विषमता और भेदभाव को समाप्त करने की एक सार्थक पहल की थी, समाज के सभी वर्गों को एक माला में पिरोने का काम किया। वेदों के गहन अध्ययन किया और उन्हें सरल बनाया ताकि वेद जनमानस के लिए व्यवहारिक हो सके। उन्होंने समाज में फैली विपरीत विचारधाराओं को शास्त्रार्थ से हराया। व्यावहारिक दर्शन को प्राथमिकता दी। केरल में जन्में आदिशंकराचार्य को शिव का अवतार माना जाता है जिसके प्रमाण उन्होंने अपने अल्पायु जीवन में भी दिए सात वर्ष की आयु में चारों वेदों का ज्ञान उन्हें था,बारहवें वर्ष में सर्वशास्त्र पारंगत और सोलहवें वर्ष में ब्रह्म सूत्र- भाष्य की रचना कर दी। शंकराचार्य ने लुप्त प्रायः सनातन धर्म की पुर्नस्थापना हेतु भारत के चारों कोनों में चार मठों की स्थापना की जिनकी प्रासंगिकता आज भी विद्यमान है। समाज ठीक दिशा में चले, इसलिए संतों के नेतृत्व में आदि शंकराचार्य के अद्वैतवाद का प्रचार-प्रसार किया। समाज के समरसता को प्रवाह हो इस हेतु उनके एकात्मवाद में उन्हें सर्व वर्ग को एक समान माना।. 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के दर्शन के माध्यम से संपूर्ण विश्व को एक दुनिया एक परिवार के रूप में मानना सभी प्राणियों में प्रभु का वास मानकर सबके साथ एक सा व्यवहार उनके एकात्मवाद का प्रमुख उद्देश्य था। आज जिस सनातन धर्म की हम चर्चा करते हैं उसके संरक्षण का पूर्ण श्रेय शंकराचार्य को ही जाता है, वे न होते तो भारत का यह स्वरूप ही न होता. उन्होंने उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम को जोड़कर सांस्कृतिक रूप से देश को एक सूत्र में बांधा। आदि गुरु का एकात्मवाद संपूर्ण विश्व को धर्म, पंथ, रंग, जाति, लिंग, प्रजाति एवं भाषा आदि की विविधताओं से परे एक सूत्र में बांधने का दर्शन है। आदि शंकराचार्य ने अपने इसी चिंतन को समाज में स्थापित करने हेतु अपने संपूर्ण जीवन को अर्पित कर दिया। उनकी दृष्टि में जब एक मूल कारण की अभिव्यक्ति यह नानारूपात्मक संसार है, तब सभी प्राणी मात्र वही मूल रूप हैं, उससे भिन्न नहीं हैं। इस प्रकार का चिंतन यदि समाज में विकसित होता है, तो ऊँच-नीच, भेदभाव, जाति, धर्म, सम्प्रदाय अपने आप समाप्त हो जायेंगे। भारत ना सिर्फ एक देश है बल्कि भाषाओं, रंग-रूप और अपनी संस्कृति के लिए एक उपमहाद्वीप के रूप में भी जाना जाता है।

The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-401X

भारतीय संस्कृति और संचार माध्यम

भारतीय उपमहाद्वीप में अनेक प्राचीन सभ्यताओं के विकास के साथ-साथ अनेक तरह की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं ने भी विकास किया। अपनी इन्हीं परंपराओं के कारण भारत वर्ष में अपने तरह के पारंपरिक त्यौहारों ने अपना स्थान निर्मित किया है। भारतीय उपमहाद्वीप के ये पारंपरिक त्यौहार अपनी एक अलग ही पहचान रखते हैं। यहां के प्राचीन त्यौहारों का एक दर्शन है। प्रत्येक हिंदू त्यौहार एक विशेष पूजा के साथ संपन्न किए जाते हैं, देश के त्यौहार लोगों को उम्र, जाति और लिंग के भेदभाव के बिना एक साथ एकजुट होकर मनाने की परंपरा है। भारतीय प्राचीन त्यौहारों में एक तरफ जहां इसकी सांस्कृतिक विरासत देखने को मिलती है वहीं दूसरी तरफ सामाजिक एकता का भी प्रभाव है। (Patel, 2018) कुछ जनजातियों की संस्कृति में तो संचार का सीधा प्रभाव उनके सामाजिक और आध्यात्मिक संवाद से जोड़ता है। मध्य प्रदेश की बैगा जनजाति इसका एक जीता जागता उदाहरण है जहां आज भी प्रकृति से होने वाले आध्यात्मिक संवाद का सीधा असर उनके सामाजिक जीवन पर भी पड़ता है।।

बैगाओं के रहन सहन का करीब से अध्ययन करने पर साफ पता चलता है कि उनका रहन सहन और उनके रीति रिवाज और त्यौहारों में प्रकृति और समाज से सीधा संबंध है, उनकी सभी परंपराओं में सामाजिक और अध्यात्मिक संवाद का एक रास्ता खुलता है। यूं तो बैगाओं पूरे वर्ष भर त्यौहारों सा माहौल होता है लेकिन वर्ष में कुछ ऐसे भी त्यौहार होते जिनका समुदाय को बेसब्री से इंतजार होता है। इस समुदाय में एक उत्सव रसनबा नाम से मनाया जाता है जिसे बैगा अपने आदि पुरुष " नंगा बैगा" की याद में मनाया जाता है। यह उत्सव आदि बैगा के मधुमक्खियों के शहद को बिना उनकी अनुमित चखने के बाद उनसे क्षमा याचना के रूप में मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि शहद को चखने के बाद जब आदि बैगा को अहसास हुआ कि उनसे गलती हो गई तो उन्होंने मधुमक्खियों में क्षमा याचना करते हुए हर 9 वे दिन उनकी पूजा करने के परिणाम स्वरूप कालांतर में उत्सव के रूप में प्रचलित हो गई। इस उत्सव का सीधा संबंध प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों और खाद्य पदार्थों के उचित उपभोग की तरफ इशारा करता है। (Patel, 2018)

The Sameeksha Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-401X

आध्यात्मिक भारत में सामाजिक पुनर्रचना में संचार माध्यम

भारत में संचार माध्यम की सबसे पहले शुरुआत नारद से मानी जा सकती है देवर्षि नारद घूम-घूम कर संवाद-वहन करने वालों में अग्रणी थे। सभी पुराणों में महर्षि नारद एक मुख्य व अनिवार्य भूमिका में प्रस्तुत हैं। उन्हें देवर्षि की संज्ञा दी गई, परन्तु उनका कार्य देवताओं तक ही सीमित नहीं था। किसी रूप में उन्हें भले ही भेदी के रूप मे उलाहना दी जाये लेकिन सही मायनों में उन्होंने संचार के माध्यम से सामाजिक पुनर्रचना का कार्य किया। देवर्षि नारद ने सूचनाओं का आदान-प्रदान लोकहित का ध्यान में रखकर किया। कई बार उनकी सूचनाओं या संप्रेषण शैली से देवताओं को तनाव उत्पन्न होता प्रतीत होता था, लेकिन लोक या जन की दृष्टि से विचार करने पर उनके अन्तर निहित भाव का बोध सहज ही हो जाता है। नारद की ही प्रेरणा से वाल्मीकि ने रामायण जैसे महाकाव्य और व्यास ने भागवत गीता जैसे संपूर्ण भक्ति काव्य की रचना की थी। उनके हर परामर्श में और प्रत्येक वक्तव्य में कहीं-न-कहीं लोकहित झलकता है। उन्होंने दैत्य अंधक को भगवान शिव द्वारा मिले वरदान को अपने ऊपर इस्तेमाल करने की सलाह दी। रावण को बाली की पूंछ में उलझने पर विवश किया और कंस को सुझाया की देवकी के बच्चों को मार डाले। वह कृष्ण के दूत बनकर इन्द्र के पास गए और उन्हें कृष्ण को पारिजात से वंचित रखने का अहंकार त्यागने की सलाह दी। यह और इस तरह के अनेक परामर्श नारद के विरोधाभासी व्यक्तित्व को उजागर करते दिखते हैं। परन्तु समझने की बात यह है कि कहीं भी नारद का कोई निजी स्वार्थ नहीं दिखता है। वे सदैव सामूहिक कल्याण की नेक भावना रखते हैं। उन्होंने असुरी शक्तियों को भी अपने विवेक का लाभ पहुंचाया। जब हिरण्य तपस्या करने के लिए मंदाक पर्वत पर चले गए तो देवताओं ने दानवों की पत्नियों व महिलाओं का दमन प्रारंभ कर दिया, परन्तु दूरदर्शी नारद ने हिरण्य की पत्नी की सुरक्षा की जिससे प्रहलाद का जन्म हो सका। परन्तु उसी प्रहलाद को अपनी आध्यात्मिक चेतना से प्रभावित करके हिरण्य कश्यप के अंत का साधन बनाया। इन सभी गुणों के अतिरिक्त नारद की जिन विशेषताओं की ओर कम ध्यान गया है वह है उनकी 'संचार' योग्यता व क्षमता। नारद ने 'वाणी' का प्रयोग इस प्रकार किया जिससे घटनाओं का सृजन हुआ। नारद द्वारा प्रेरित हर घटना का परिणाम लोकहित में निकला। उनके संवाद में हमेशा लोक कल्याण की भावना रहती थी। तीसरे, नारद द्वारा रचित भक्ति सूत्र में 84 सूत्र हैं। प्रत्यक्ष रूप से ऐसा लगता है कि इन सूत्रों में भक्ति मार्ग का दर्शन दिया गया है और भक्त ईश्वर को कैसे प्राप्त करें ? यह साधन बताए गए हैं। परन्तु इन्हीं सूत्रों

का यदि सूक्ष्म अध्ययन करें तो केवल पत्रकारिता ही नहीं पूरे मीडिया के लिए शाश्वत सिद्धांतों का प्रतिपालन दृष्टिगत होता है। नारद भक्ति सूत्र का 15 वां सूत्र "तल्लक्षणानि वच्यन्ते नानामतभेदात" (मतों में विभिन्नता व अनेकता है, यही पत्रकारिता का मूल सिंद्धांत है) इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। तो वहीं दूसरी तरफ भारत के सबसे लोकप्रिय पारंपरिक खेल सांप सीढ़ी में सामाजिक पुनर्रचना का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं, सांप सीढ़ी का खेल तेरहवीं शताब्दी में कवि संत ज्ञान देव द्वारा तैयार किया गया था इसे मूल रूप से मोक्षपट कहते थे। इस खेल में सीढ़ियाँ वरदानों का प्रतिनिधित्व करती थीं जबकि सांप अवगुणों को दर्शाते थे। इस खेल को कौडियों तथा पांसे के साथ खेला जाता था। आगे चल कर इस खेल में कई बदलाव किए गए, परन्तु इसका अर्थ वहीं रहा अर्थात अच्छे काम लोगों को स्वर्ग की ओर ले जाते हैं जबकि बुरे काम दोबारा जन्म के चक्र में डाल देते हैं। तो वहीं त्रेता से लेकर द्वापर युग तक हनुमान भी जन संचार के रूप में हमारे सामने आदर्श प्रस्तुत करते हैं। सही मायनों में ``बुद्धिमतांवरिष्ठम्´´ हनुमान जनसंचार के नायक थे। (Patel, Impact of Advancements in Technological Aids in Communication Media in Bringing about Social Reformation, 2018)

आधुनिक भारत में दृष्टि ज्ञान, सामाजिक पुनर्रचना और संचार

इंटरनेट के हर हाथों में पहुंच जाने के बाद सोशल मीडिया ने सामाजिक पुनर्रचना के लिए एक अद्भुत संचार माध्यम की भूमिका निभाई है। शिक्षा के लिए जागरूकता से लेकर राजनीति तक और घरेलू हिंसा से लेकर अपने अधिकारों को लेकर लड़ने तक हर स्तर पर बदलाव देखने को मिल रहा है। ख़ासकर महिलाओं से जुड़े मुद्दे और उनकी आवाज बनकर सोशल मीडिया सामने आया है।। फेसबुक, ट्विटर और यू-ट्यूब जैसे सोशल मीडिया के मंच अब सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं रह गए हैं बल्कि इन मंचों के जरिए दुनिया भर की लोगों को अपनी बात कहने का मौका मिला है। तुर्की में माइक्रो ब्लॉगिग साइट ट्विटर के जरिए महिलाओं ने `डॉन्ट ऑक्यूपाई माई स्पेस'  कैंपेन "यानी `मेरी जगह मत घेरिए' आंदोलन को परवान चढ़ाया, अपने आप में एक अद्भुत आंदोलन साबित हुआ। यह आंदोलन उन पुरुषों के खिलाफ था, जो बस या ट्रेन में जानबूझकर पैर पसारते हैं और पास बैठी महिलाओं को सिकुड़कर बैठने को मजबूर करते हैं। महज़ 8 करोड की आबादी वाले इस छोटे से देश में एक करोड़ में ज्यादा लोग ट्विटर का इस्तेमाल करते हैं। भारत में सोशल मीडिया की सबसे अहम उपस्थिति का दिल्ली के दामिनी कांड में देखने को मिली दिसंबर 12 में दिल्ली में बस पर पैरामेडिकल छात्रा के साथ हुई

बलात्कार और उसके बात उसकी मौत ने पूरे देश को एक साथ जोड़ दिया था। और यकीनन इस पूरी लड़ाई में सोशल मीडिया का अहम रोल में था, JUSTICE FOR DAMINI, JUSTICE FOR NIRBHAYA, RIP DAMINI, जैसे कई पेज फेसबुक पर बनाए गये और इन्हें लाखों की संख्या में लोगों ने LIKES AND SHARE किया यह सोशल मीडिया की देन थी जिसने लोगों के घर से बाहर आने को मजबूर कर दिया, दिल्ली का सामूहिक बलात्कार कांड अगर मुद्दा बन पाया और शासन-प्रशासन को बैकफुट पर आकर नए कानून बनाने के लिए सोचने पर विवश होना पड़ा तो उसमें सामाजिक चेतना के साथ-साथ सोशल मीडिया की भी भूमिका रही। (Patel, Impact of Advancements in Technological Aids in Communication Media in Bringing about Social Reformation, 2018) इसमें कोई दो राय नहीं है कि संचार माध्यम हमेशा से ही सामाजिक, सांस्कृतिक औऱ आध्यात्मिक पुनर्रचना में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे है।

संदर्भ

1. Patel, K. (2018). Impact of Advancements in Technological Aids in Communication Media in Bringing about Social Reformation. Proceeding of the Global Conference on Journalism and Mass Communication. 1, pp. 1-5. Colombo: TIIKM. doi:10.17501/globalmedia.2018.1101.
2. Patel, K. (2018, 01 01). बैगा जनजातीय त्यौहारों में सामाजिक और अध्यात्मिक संवाद. The Anveshan: A Multidisciplinary Journal in Hindi, 2(1). doi:10.13140/RG.2.2.33570.07362.
3. Rai, S. (2017, 06 17). संचार सिद्धांत और भारतीय दर्शन. Retrieved 07 06, 209, from vicharpanchayat.